।। ओ३म् ।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वैदिक-संध्या एवं अग्निहोत्र

आर्य समाज

एम एच ए सी स्कूल नागवनी जम्मू

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'

यज्ञ संसार का सर्वोतम कर्म है।

आत्मोन्नति सहायक

ऐक्यभावना प्रेरक

प्रदूषण शमनकारक

पुष्टिकारक

तुष्टिकारक

रोग शमनकारक

आत्मिक निर्मलता प्रदायक

उन्नत फलदायक

वर्षा जल शुद्धिकारक

परमार्थ पोषक

ओ३म्

वैदिक संध्या मन्त्र

।। वाह्यशुद्धिकरणमन्त्रः ।।

कुशा या हाथ से मार्जन करें :

।। ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

१. ।। अथाचमनममन्त्रः।।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।।

२. ।। अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्राः।।

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा और

अनामिका अंगुलियों से प्रथम दाएँ और पश्चात् बाएँ पार्श्व में निम्न मन्त्रों से स्पर्श करें:

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्याम् यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

३. ।। अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्रः।।

बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ की अंगुलियों से निर्दिष्ट अंगों पर जल छिड़कें:

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

४. ।। अथ प्राणायाममन्त्राः।।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।।

(इस मन्त्र को बोलकर तीन बार प्राणायाम करें:।

५. ।। अथाघमर्षणमन्त्राः।।

ओं ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसेऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।।१।।
ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।२।।
ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।।३।।

६. ।। अथाचमनमन्त्राः।।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।

७. ।। अथ मनसापरिक्रमामन्त्राः।।

निम्न मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन से चारों ओर बाहर–भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निःशंक, उत्साही, आनन्दित तथा पुरुषार्थी रहना।

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि चं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१।।

ओं दक्षिणा दिगिन्दोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी
रक्षित पितर इषवः तेभ्यो
नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्यः ।।२।।

ओं प्रतीची दिग् वरूणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्यः ।।३।।

ओं उदीचीदिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षितशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो
नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्यः ।।४।।

ओं ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षित वीरुध इषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो
नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।५।।
ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो
नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।६।।

६. ।। अथोपस्थानमन्त्राः ।।

अब परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमात्मा के निकट मैं और मेरे निकट परतात्मा है ऐसी बुद्धि करके–

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्त ज्योतिरुत्तमम् ।।१।।
ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।२।।
ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा
जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।।३।।
ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।४।।

२. ।। अथ गायत्रीमन्त्रः।।

ओं भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

१०. ।। अथ समर्पणम्।।

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ कामोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

११. ।। अथ नमस्कार – मन्त्रः।।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।।
ओं शान्तिः। शान्ति। शान्ति।
।। इति सन्ध्योपासनाविधिः।।

।। ओ३म्।।

अथदेवयज्ञः (अग्निहोत्रम्)

।। आचमनमन्त्रा।।

दायें हाथ में जल लेकर तीन मन्त्रों
से तीन बार आचमन करें:
ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।२।।
ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।१।।
ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३।।

।। अंगस्पर्शमन्त्राः।।

बायें हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़कर दायें हाथ की मध्यमा
तथा अनामिका अंगुलियों से अंगों को स्पर्श करें
ओं वाङ्मऽआस्येऽस्तु। (इस मन्त्र से मुख)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्ते। (इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र)
ओं अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु। (इस मन्त्र से दोनों आँख)
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (इस मन्त्र से दोनों कान)
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु। (इस मन्त्र से दोनों बाहू)

ओं ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु। (इस मन्त्र से दोनों जंघा)
ओं अरिष्टानि मेंऽडगनि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।
(इस मन्त्र से सारे शरीर पर मार्जन करें)

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्नऽआसुव ।।१।।

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है,
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आती है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे,
मंगलमय! गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजे।।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।२।।

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ दाता है,
सूर्य चन्द्रलोकादिक को, तू रचता और टिकाता है।
पहले था अब भी तू ही है, घट–घट में व्यापक स्वामी,
योग, भक्ति तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते, प्रशिषं यस्य देवः।।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।३।।

तू ही आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण–शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में,
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु! तुझसे लगन लगाने में।।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।

य इशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः, कस्मै
देवाय हविषा विधेम ।।४।।

तू ने अपनी अनुपम माया से, जग–ज्योति जगाई है,
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है।
अपने हिय सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति–भाव से भेटें लेकर, शरण तुम्हारी आते हैं।।

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा,
येन स्वः स्तभितं येननाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।५।।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है,
धरणी को धारण कर तू ने, कौशल अलख जगाया है।
तू ही विश्वविधाता, पोषक ! तेरा ही हम ध्यान धरें,
शुद्ध भाव से भगवान तेरे, भजनामृत का पान करें।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो, विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्काकास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु, वयं स्याम
पतयो रयीणाम् ।।६।।

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सब में तु ही समाया है,
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का तूने साज सजाया है,
धन दौलत भरपूर दीजिये, यही भक्त को भाया है।।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता,
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।७।।

तू गुरू है, प्रजेश भी तू है, पाप–पुण्य फल दाता है,

तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।
भक्तों को इस भवबन्धन से, तू ही मुक्त कराता है,
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु ! सर्वकाल का ज्ञात है।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।८।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु ! सबका सिरजन हार हू ही,
रसना निशिदिन रटे तुम्ही को ! मन में बसना सदा तू ही।
कुटिल पाप से हमें बचाते, रहना हरदम दया निधान,
अअपने भक्त जनों को भगवान् ! दीजे यही विशद वरदान।।

।। अग्न्याधान ।।

हवन–कुण्ड में समिधा रखें।
नीचे के मन्त्र से दीप प्रज्जवलित कर
कपूर जलाकर कुण्ड में रखें,
ओं भूर्भुवः स्वः। ओं भूर्भुव स्वः।
द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।

।। अग्निप्रदीपन ।।

ओम् उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते संजृजेथामयं च।
अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।

।। समिधानानमन्त्राः।।

निम्न मन्त्रों से एक–एक समिधा घी में
डुबो कर अग्नि में आहुति दें:
ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय।

चास्मान् प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाधने समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।
पहली समिधा
ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयातातिथिम्।
हव्या जुहोतन स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम। दूसरी समिधा।
ओं तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोत्रा यविष्ठ्य स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।
इस मंत्र से तीसरी समिधा की अहुति दें।

।। पंचघृताहुतिमंत्राः ।।

नीचे लिखे मन्त्र से एक–एक करके पाँच घृत की अहुति दें।
ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय।
चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

।। जल–प्रसेचन–मन्त्राः ।।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व। इस मन्त्र से पूर्व में।
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व। इससे पश्चिम में।
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व। इससे उत्तर में।
ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।
इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें।

।। आधारावाज्याहुति – मन्त्रौ ।।

ओं अग्नये स्वाहा। इदमनये इदन्न मम

(कुण्ड के उत्तर दिशा में आहुति)
ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमय इदन्न मम
(कुण्ड के दक्षिण में आहुति)

।। आज्यभागाहुति – मन्त्रौ ।।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम
(कुण्ड के बीच में आहुति)
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम
(कुण्ड के बीच में आहुति)

।। प्रातः काल की आहुतियाँ ।।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
ओं सूर्यो बर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवात्या जुषाणः
सूर्यो वेतु स्वाहा।

।। सायं काल की आहुतियाँ ।।

ओं अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ओं अग्निर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। (मौन आहुति)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

।। प्रातः काल सायं कालीन की आहुति मन्त्र ।।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽवपानाय इदन्न मम।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।

इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवायादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवायवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदं न मम।
ओं आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा
सुवा यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।
ओं अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।
यदि अधिक आहुति देनी हो तो गायत्री मन्त्र से दें।

।। पूर्णाहुतिमंत्रः ।।

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।।१।।
इससे एक–एक करके तीन बार आहुति दें।

।। यज्ञ–प्रार्थना ।।

पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल–कपट को मानसिक बल दीजिये ।।१।।
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक–सागर से तरें ।।२।।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म–मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ।।३।।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग–पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें ।।४।।

भावना मिट जाय मन से पाप–अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नारी की ।।५।।
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु–जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ।।६।।
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा, प्रेम–पथ–विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ।।७।।
प्रेमरस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करूणारूप करूणा आपकी सब पर रहे ।।८।।

।। शुभकामना ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्रादिण पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।
सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान,
सब का सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।।
सब हों नीरोग भगवान, धन–धान्य के भंडारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

।। संकल्प ।।

सब वेद पढ़े, सुविचार बढ़ें, बलपाय चढ़ें, नित ऊपर को।
अविरूद्ध रहें, ऋजुपन्थ गहें, परिवार कहें, वसुधाभर को।
ध्रव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग तरें, भव सागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें, जगती भर को।

।। राष्ट्रीय प्रार्थना ।।

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी
जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः
शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीः
धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो
युवास्य यजामानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो
वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्
यजु०११।१२।।

भावार्थ :

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारू गौएँ, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र धोवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग–क्षेमकारी, स्वधीनता हमारी।।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिन्तरिक्षँ शान्ति पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म
शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा सा शान्तिरेधि।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः ।शान्तिः।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।।१।।
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,

सकल विश्व में जड़ चेतन में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।
ब्रह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्यजनों के होवे धन में और शूद्र के हो चरनन में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तनमें, मनमें और जगती के हो कणकण में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।

।। जयघोष ।।

जो बोले सो अभय	वैदिक धर्म की जय।
मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र की	जय
योगिराज श्री कृष्णचन्द्र की	जय
युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द की	जय
गुरुवर स्वामी विरजानन्द की	जय
स्वामी श्रद्धानंद की	जय
धर्म पर मिटने वालों की	जय
देश पर बलिदान होने वालों की	जय
भारतमाता की	जय
गो माता की	रक्षा हो, पालन हो।
वेद की ज्योति	जलती रहेगी
ओ३म् का झंडा	ऊँचा रहेगा
वैदिक ध्वनि	ओ३म्
वैदिन अभिवादन	नमस्ते
महाराजा हरिसिंह की	जय